ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

bZjku ;q) dk 1857 dh Hkkjrh; Lora=rk laxzke ij izHkko

MkW0 Ñ".k iky
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
एकलव्य महाविद्यालय, बाँदा,उ0प्र0

1856 ई0 में ईरान से अंग्रेजों का युद्ध छिड़ गया।[1] अंग्रेजों को परेशान करने तथा भारतवर्श से सहायता के द्वार बन्द करने के लिए ईरान के बादशाह ने अपने गुप्तचर देहली भेजे। भारतवर्श के समाचार पत्रों में ईरान की विजय की बड़ी आशाएँ प्रकट की जाती थीं और यह प्रसिद्ध किया जाता था कि फारस की खाड़ी में अंग्रेज बुरी तरह पराजित हुए हैं। यह बात भी प्रसिद्ध हुई कि अंग्रजों को भ्रम है कि उन्होंने अमीर दोस्त मुहम्मद खाँ को मित्र बना लिया है किन्तु वास्तव में वह ईरान के अधीन है।[2] क्रीमिया के युद्ध का भी भारतवर्श पर बड़ा प्रभाव पड़ा। भारतीयों ने समझ लिया कि अंग्रेज अजेय नहीं।[3] सेबैस्टोपोल के आक्रमण में अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों की पराजय के उपरान्त कुस्तुनतुनियाँ में जब अज़ीममुल्लाह खाँ की टाइम्स के विशेश संवाददाता डा0 रसल से वार्ता हुई तो उसने क्रीमिया जाकर उन रुस्तमों (रूसियों) को देखने की इच्छा प्रकट की जिन्होंने फ्ऱांसीसियों तथा अंग्रेजों को पराजित कर दिया था।[4]

सर थ्योफ़िलस मेट्काफ़ भी बहादुरशाह के मुकदमें का एक साक्षी था। उसने बयान किया कि ईरान के हिरात की ओर अग्रसर होने की भारतीयों में बड़ी चर्चा होती थी और विशेश कर रूसियों के भारतवर्श पर आक्रमण के सम्बन्ध में। प्रत्येक देशी समाचार पत्र का संवाददाता काबुल में रहता था, और इस प्रकार उत्तर की ओर से निरंतर समाचार प्रेशित किये जाया करते थे। प्रत्येक समाचार–पत्र में वहाँ के समाचारों का साप्ताहिक विवरण होता था। विद्रोह के छः या सात सप्ताह पूर्व सैनिकों की लाइनों में ये समाचार बड़े प्रसिद्ध थे और उन पर वाद–विवाद भी होता

था कि एक लाख रूसी उत्तर से आ रहे हैं और कम्पनी का राज्य नश्ट हो जायेगा।

सर थ्योफ़िल्स मेटकाफ के बयान के अनुसार विद्रोह के छः सप्ताह पूर्व जामा मस्जिद की दीवार पर एक विज्ञापन चिपका हुआ पाया गया जिसके दाहिनी ओर तलवार तथा बाईं ओर ढाल थी। इसमें लिखा था कि ईरान का बादशाह शीघ्र ही इस देश में आने वाला है और उसने समस्त मुसलमानों से अंग्रेज काफिरों को निकालने का आग्रह किया है।[5] सादिकुल अखबार ने समाचार को अत्यधिक प्रसिद्धि प्रदान की और इस विज्ञापन को अपने समाचार पत्र में टिप्पणी सहित प्रकाशित किया। विज्ञापन इस प्रकार था ''मैं शीघ्र ही हिन्दुस्तान के राजसिंहासन पर आरूढ़ होता हूँ और वहाँ के बादशाह तथा प्रजा को प्रसन्न करता हूँ। जिस प्रकार अंग्रेजों ने उन्हें रोटियों का मुहताज किया है वैसे ही मैं उनकी सम्पन्नता का प्रयत्न करूँगा। मुझे किसी के धर्म से कोई विरोध नहीं।'' अखबार के सम्पादक ने इस विज्ञापन पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि ''शाह ईरान के हिन्द पर अधिकार से हिन्दियों को क्या प्रसन्नता? इस विज्ञापन से ज्ञात होता है कि (ईरान का बादशाह) स्वयं भारतवर्श के राजसिंहासन पर आरूढ़ होगा। वे तो तब प्रसन्न हों कि जब हमारे सुल्तान को सिंहासनारूढ़ करके अब्बासशाह सफ़वी[6] के समान व्यवहार करें। आखिर ईरानियों को तैमूर ही ने राज्य प्रदान किया है और इसी को दृश्टि में रखकर अब्बासशाह ने हुमायूं की सहायता की?''[7] सम्पादक की टिप्पणी से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय उस समय अंग्रेजों के स्थान पर किसी दूसरे राश्ट्र को अपने सिर पर नहीं बैठा लेना चाहते थे। अंग्रेजों के पतन तथा रूस अथवा ईरान की कथित सफलता से उन्हें इस कारण प्रसन्नता होती थी कि इस उपाय से वे स्वयं स्वतंत्र हो जायेंगे। सादिकुल अखबार ईरान के आक्रमण के समाचार फैलाने में सब से आगे था। वह शीआ समाचार पत्र भी ज्ञात होता है किन्तु वह भारतवर्श में ईरान के शीआ राज्य को भी नहीं सहन कर सकता था। बहादुरशाह के राज्य में से भारतवर्श की स्वतंत्रता के स्वप्न की सफलता होती थी, मुसलमानों के राज्य का पुररुद्धार नहीं।

इसी बीच में चिकने कारतूसों का झगड़ा भी खड़ा हो गया। भारतीयों को मूर्ख एवं संकीर्णवादी सिद्ध करने के लिए कारतूसों को ही क्रान्ति का मुख्य कारण बताया जाता है किन्तु चिकने कारतूसों को क्रान्ति के विस्फोट का सुगम साधन ही कहा जा सकता है। इस प्रश्न ने सुलगती हुई आग को ज्वालामुखी बना दिया। लोग समय के पूर्व निश्चित योजना में विघ्न पड़ गया।

1856 ई0 के अन्त में एनफ़ील्ड राइफ़लों का प्रयोग भारतवर्श में प्रारम्भ होना निश्चय हुआ। उनके लिए विलायत से चिकने कारतूस आये और यह आदेश दिया गया कि इसी प्रकार के कारतूस कलकत्ते तथा मेरठ के आर्डिनेंस डिपार्टमेंट बनायें।

अभी इन कारतूसों का आम प्रयोग प्रारम्भ भी न हुआ था कि यह प्रसिद्ध होने लगा कि इनमें गाय तथा सुअर की चर्बी का प्रयोग होता है।[8] 27 जनवरी 1857 ई0 को सरकारी आदेश हो गया कि भारतीय सेना को जो कारतूस दिये जायें उनमें सैनिक जो चीज़ उचित समझें प्रयोग कर सकते हैं। तत्पश्चात् मेजर जनरल हेयरसे कमानडिंग प्रेसीडेंसी डिवीजन के लिखने पर यह सुविधा दे दी गई कि मोम तथा तेल से कारतूस चिकनाये जा सकते हैं और नया कागज उन्हीं मसालों से तैयार किया जा सकता है जो इससे पूर्व प्रयोग में आते थे।[9]

यदि कारतूसों का ही झगड़ा होता तो यहीं बात समाप्त हो जानी चाहिये थी, किन्तु वास्तव में भारतीय अब अंग्रेजों की किसी बात पर विश्वास नहीं करना चाहते थे। उन्होंने अगणित संधि–पत्र देखे थे जो बात की बात में समाप्त कर दिये गये थे। जब उन लिखित संधि–पत्रों का कोई विश्वास नहीं तो फिर इन आदेशों का क्या विश्वास किया जा सकता था जो आज एक परिस्थिति में दे दिये गये और कल फिर दूसरी परिस्थिति में उनका खंडन हो सकता था। मोम और तेल के प्रयोग की सुविधा केवल कागज ही पर रहेगी और जब बड़ी संख्या में इनका प्रयोग होगा तो फिर यह बात कहाँ तक चलेगी, यह बात किसी की समझ में न आती थी। फरवरी में बैरकपुर में एक सैनिक न्यायालय ने कारतूसों तथा उन पर लपेटे जाने वाले कागजों के विशय में पूछताछ कराई।[10] जनरल हेयरसे ने इस न्यायालय को रिपोर्ट भेजने के उपरान्त सरकार को लिखा कि ''हम बैरकपुर में एक सुरंग पर बैठे

हैं जो शीघ्र उड़ने वाला है।'[11] भारतीय सैनिकों का उसे बड़ा अनुभव था। वह उनकी भावनाओं को समझ गया था। वह उनके नेत्रों में स्वतंत्रता की महत्त्वाकांक्षा की चमक देखता था किन्तु सम्भवतः वह यही समझता था कि लोगों को भय है कि उन्हे जबर्दस्ती ईसाई बनाया जाने वाला है। यह समझना उसके लिए असम्भव था कि भारतीय, अंग्रेजी राज्य ही का अन्त करके स्वतंत्र होना चाहते हैं। उसने 9 फरवरी 1857 ई0 को परेड पर सैनिकों को समझाया और उनकी 'शंकाओं के समाधान का प्रयत्न किया[12] किन्तु कारतूसों के विषय में दूर–दूर तक पत्र–व्यवहार होने लगा था और लोग क्रान्ति के लिए तैयार हो रहे थे।[13] आग बड़ी तेजी से अम्बाले तथा सियालकोट तक फैल गई।[14]

बैरकपुर से 100 मील पर बहरामपुर की छावनी थी। वहाँ भी वही आग सुलग रही थी। 25 फरवरी को बैरकपुर से 34वीं रेजीमेंट के कुछ सैनिक बहरामपुर में आये। उनसे सम्पर्क में आने पर बहरामपुर की नं0 19 रेजीमेंट ने भी नये कारतूस स्वीकार न करने का संकल्प कर लिया। कर्नल मिचेल ने 26 फरवरी की परेड पर नये कारतूसों के अभ्यास का आदेश दिया। सैनिकों ने नये कारतूसों को स्वीकार न करना निश्चय कर लिया था। जब कर्नल मिचेल को यह ज्ञात हुआ तो उसने भारतीय कमीशण्ड अफसरों को धमकाया कि वे अपनी कम्पनी के सैनिकों को समझा दें कि यदि उन्होंने आज्ञा की अवहेलना की तो उन्हें कठोर दंड दिये जायेगे। रात्रि में 10 और 11 के बीच में सैनिकों ने वह घर, जिसमें सैनिकों के हथियार तथा सामान रहते थे, तोड़ डाला किन्तु भारतीय अफसरों की सहातया से मिचेल ने 3 बजे तक सबको शान्त कर लिया। प्रातःकाल की परेड पर भी कुछ न हुआ[15] किन्तु इस पल्टन को दंड देने तथा भारतीयों को दहलाने के लिए 29 मार्च 1857 ई0 को मध्यान्ह में 53वीं गोरा रेजीमेंट के 50 सैनिक नदी के मार्ग से कलकत्ते पहुँचे। बहरामपुर की 19वीं रेजीमेंट के बैरकपुर बुलाये जाने के आदेश दिये जा चुके थे। गोरा पल्टन के पहुँचने के समाचार से मंगल पाँडे का रक्त खौल उठा। उसने अपने साथियों को युद्ध के लिए ललकारा किन्तु अभी युद्ध का समय नहीं आया था। सैनिक शान्त रहे। अंग्रेज अधिकारियों ने उसकी हत्या करनी चाही

किन्तु जब वह घेर लिया गया तो उसने अंग्रेजों द्वारा मारे जाने की अपेक्षा आत्महत्या कहीं अच्छी समझकर स्वयं गोली मार ली। वह मरा नहीं किन्तु घायल हो गया और चिकित्सालय भेज दिया गया।[16] 31 मार्च को 19वीं भारतीय पैदल रेजीमेंट को बैरकपुर में बुलाकर उसे भंग कर दिया गया।[17] सैनिकों ने अपमानित होकर भी कुछ न कहा और कलकत्ते के अंग्रेज, जो अत्यन्त भयभीत थे, संतुश्ट हो गये। 8 अप्रैल को मंगल पाण्डे को फाँसी दे दी गई।[18] 21 अप्रैल को जमादार ईश्वरी पांडे को भी, जिसने मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने से मना कर दिया था, फाँसी दे दी गई।[19] 34वीं रेजीमेंट के विशय में पूछताछ के उपरान्त जो निर्णय हुआ, उसमें सिक्खों तथा मुसलमानों की खूब पीठ ठोंकी गई और उन्हें राजभक्त तथा हितैशी एवं हिन्दुओं को विद्रोही सिद्ध किया गया।[20] एक अधिकारी, मुसलमान सैनिकों से वास्तविक बात का पता लगाने के लिए, नियुक्त हुआ किन्तु इस अधिकारी को कोई सफलता प्राप्त न हुई और अप्रैल के अन्त से पूर्व लार्ड कैनिंग को विश्वास हो गया कि एशियाई राश्ट्रों की पारस्परिक शत्रुता से, जो सर्वदा से ब्रिटिश सत्ता का बहुत बड़ा आधार समझी जाती है, कोई लाभ नहीं हो सकता। ''हमारे विरुद्ध हिन्दू तथा मुसलमान दोनों संगठित हो गये हैं।''[21]

मार्च के अन्त में कारतूसों का प्रश्न पंजाब में भी पहुँच गया और सियालकोट के सैनिकों को बैरकपुर के भाइयों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया जाने लगा। 16 अप्रैल को अम्बाला में कई बँगलों में आग लगा दी गई। 18 अप्रैल को अम्बाला की दो भारतीय पल्टनों ने कारतूस लेने से इनकार कर दिया। लखनऊ में भी कुछ समय से क्रान्ति के विषय में गोष्ठियाँ होने लगी थीं।[22] अवध इररेगुलर इन्फेन्ट्री की 7वीं रेजीमेंट ने मई के आरम्भ में नये कारतूसों का विरोध प्रारम्भ कर दिया और 3 मई को लखनऊ, मूसाबाग में विद्रोह के चिन्ह पाये गये किन्तु तोपें रेजीमेंट के सामने लगा दी गई और उनसे हथियार ले लिये गये। दूसरे दिन हेनरी लारेंस ने गवर्नर जनरल को लिखा कि ''कहा जाता है कि 7वीं रेजीमेंट पर जो आघात हुआ, उसका नगर में बड़ा प्रभाव हुआ। लोग मुझसे यहाँ तक कहते हैं कि यदि 7वीं रेजीमेंट खड़ी रह जाती तो 48वीं रेजीमेंट उस पर गोली न चलाती।[23]

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

I nHk xUFk %

1 परसी साइक्स, ए हिस्ट्री आफ परषिया, भाग 2, (लन्दन 1951) पृ0 349—350।
2 सादिकुल अखबार जनवरी 26, 1857, पृ0 28; मार्च 16, 1857 ई0, पृ0 82—84।
3 सिप्वाए वार इन इंडिया, भाग 1, पृ0 342—343।
4 डब्लू.एच. रसल, माई डायरी इन इंडिया (लन्दन 1860) भाग 1, पृ0 168।
5 ट्राएल पृ0 80—81।
6 भााह तहमास्प सफ़वी होना चाहिये।
7 सादिकुल अखबार 19 मार्च, 1857 ई0, पृ0 87
8 अंपेंडिवस टु तेपर्स रेलेटिव टु दी म्यूटिनीज इन दी ईस्ट इंडीज (लन्दन 1857 ई0) पृ0 2—4
9 सिक्रेटरी गवर्नमेंट आफ इंडिया का तार ऐडजुटेंट जनरल के नाम, कलकत्ता जनवरी 27, 1857 ई0।
10 स्टेट पेपर्स, भाग—1, पृ0 7—14।
11 स्टेट पेपर्स, पृ0 24।
12 स्टेट पेपर्स, पृ0 27।
13 रेड पैम्र्फलेट, पृ0 19।
14 रेड पैम्र्फलेट, पृ0 20।
15 स्टेट पेपर्स भाग—1, पृ0 41—42, डयूक आफ अरगेल, इंडिया अण्डर डलहौजी ऐंड केनिंग (लन्दन 1864) पृ0 81।
16 स्टेट पेपर्स भाग—1, पृ0 109—113।
17 स्टेट पेपर्स भाग—1, पृ0 100—103।
18 स्टेट पेपर्स भाग—1, पृ0 127।
19 स्टेट पेपर्स भाग—1, पृ0 211।
20 स्टेट पेपर्स भाग—1, पृ0 169।
21 सिप्वाए वार इन इंडिया, भाग—1, 564—565।
22 रेड पैम्फलेट, पृ0—30।
23 सिप्वाए वार इन इंडिया, भाग—1, पृ0 587—590।